प्रति

इस
से क
है।
कहा
के प्र

इस
जो
शास
कहत
नरस
का
शिख
के अ
करत
लिख
इसी

इस
भार
व्यव
ढंग

विकास पेपर बैक्स
मेन रोड, गांधी नगर, दिल्ली-110031

प्रतिहिंसा तथा अन्य कहानियाँ

मुद्राराक्षस

© लेखक

प्रकाशक
विकास पेपरबैक्स
IX/221, मेन रोड, गांधीनगर
दिल्ली-110031

प्रथम संस्करण
1992

मूल्य
पचास रुपये

मुद्रक
अजय प्रिंटर्स
शाहदरा, दिल्ली-110032

PRATIHINSA TATHA ANYA KAHANIYAN (Hindi)
by Mudrarakshas
Price : Rs. 50.00

अपने प्रिय साथी
विलायत जाफ़री को

सुनकर बोला, "भाई साहब, मैं एक खास काम से आया हूँ।"

"बताओ ?" मैंने हताश होकर कहा।

"कटोरी देवी की मृत्यु हो गई।"

"क्या ? कैसे ?"

"कैसे क्या साहब, बड़ी दिलेर औरत थी। पुलिस, ठेकेदार और मौसम की जो मार उसने सही थी, उसमें इतने बरस जी गई, यही बहुत है। उसने जान गँवा दी मगर डॉक्टर मन्नू जी को ले डूबी। साला गैंगस्टर एक्ट में जेल में है। आपसे ज्यादा अच्छी तरह कटोरी देवी को कौन जानता है। तो मैं शाम को आऊँ ? आपसे लेख चाहिए।"

"ऐं ? हाँ। आ जाओ।" मैंने कहा।

खरे के लिए कटोरी देवी पर अब जो लेख मैं लिखने बैठा हूँ उसमें फड़कते हुए पहले चन्द वाक्यों के बाद मैं नहीं जानता क्या लिखूँ।

कटोरी देवी की मृत्यु हो गई। पर डॉक्टर मन्नू जी आज नहीं तो कल, छूटेंगे ही। मेरी टूट चुकी पार्टी के लिए अब मन्नू जी के अलावा और क्या उम्मीद हो सकती है।

"संदीपन !" सहसा मैं उठ गया। संदीपन टाइपराइटर की सफाई छोड़कर मेरी तरफ देखने लगा।

एक क्षण रुककर मैंने कहा, "देखो, मैं जा रहा हूँ। शाम को खरे आए तो कह देना, एक बहुत जरूरी काम से मैं धनबाद चला गया।"

यूसुफ मियाँ की मृत्यु और प्रधानमंत्री का पानी

एक बयान

दक्षिण की तरफ शहर से बाहर जानेवाली इस सड़क पर सर्दी के दिनों में शाम इस तरह उतरती है जैसे आसपास की दुनिया पर मकड़ी का घना जाला छा गया हो।

साइकिल-सवार दूर के अँधेरे से इसी जाले को फाड़कर सहसा प्रकट होते हैं और दुबारा उसी में गायब हो जाते हैं।

धुन्ध में उनकी आकृति बहुत जल्दी गायब हो जाती है पर उनकी ऊँची आवाजें देर तक सुनाई देती हैं।

ये वही लोग हैं जो दोपहर ढलते, साइकिलों पर हर तरह की सब्जियाँ लादकर लाते हैं और शहर के इसी तरफ बनी एक नयी बस्ती के बीचोबीच सड़क के दोनों ओर बैठ जाते हैं। आप इस मुगालते में न रहें कि यह सस्ती होती होंगी। यह थोड़ी महँगी ही होती हैं, मगर इस नयी कालोनी के लिए यह बहुत बड़ी गनीमत है।

रात होते-होते ये लोग अपना सामान समेट लेते हैं और बची-खुची सब्जी के साथ वापस लौट जाते हैं। लम्बी सड़क की धुन्ध में चलना कोई अच्छा अनुभव नहीं होता। इसीलिए वे आपस में ऊँची आवाज में बातें करते हुए एकान्त का भय तोड़ते हैं।

इस कहानी के मुख्य पात्र यही लोग हैं या कहना चाहिए कि यह कहानी इसी दुनिया की है। और बाकायदगी के साथ कुछ इस तरह शुरू की जा सकती है—

कहानी की शुरुआत

"चल दिये नन्दलाल ?" सड़क के किनारे की धूल पर थोड़े से पौधे रखकर बैठे माली ने आवाज दी और उठकर खड़ा हो गया। नन्दलाल नाई झुटपुटा होते ही अपनी दूकान बढ़ा देता था। बाँस के टट्टर पर पॉलिथीन की बोसीदा चादर को ईंट के टुकड़ों से दबाकर बनाया मंडप जैसा वहाँ खड़ा रह जाता था अपनी चार बहुत पतली टाँगों पर सधा हुआ। आम की लकड़ी की एक अनगढ़ कुर्सी और कबाड़ी बाजार से खरीदी एक मेज अगले रोज तक के लिए खाली हो जाती थी।

पौधे बेचनेवाला माली नन्दलाल के जाने के बाद उसी मेज पर अपने पौधे सजा लेता था। बारिश के मौसम में टमाटर, गोभी, बैंगन और प्याज के पौधे और सर्दियाँ शुरू होने पर कई तरह के क्रोटन, कुछ देशी गुलाब, मोरपंखी वगैरह। इधर उसने तीन पौधे रबर के भी जुटा लिए थे। वह जानता था कि बड़े बँगलों में अब रबर का पौधा खासी शान से सजाया जाता था। उसके ग्राहक बड़े बँगलोंवाले कभी नहीं होते थे। अकसर दफ्तर से लौटनेवाले बाबुओं की भीड़ वहाँ सब्जी खरीदने के लिए रुकती थी। उन्हीं में से कुछ लोग उससे देशी गुलाब या सदाबहार के पौधे ले जाते थे और बहुत लालच के साथ रबर के ये पौधे भी देखते थे। माली जानता था कि उन्हीं में से कुछ अब क्रोटन भी खरीदने लगे थे और निश्चय ही वे रबर का पौधा खरीदने की दिशा में बढ़ रहे थे।

नन्दलाल को अपनी दूकान के इस इस्तेमाल से एतराज कभी नहीं हुआ। बल्कि वह खुश ही था कि माली ने उसे सुदर्शन के एक पौधे के साथ दो अधमरे से पौधे देशी गुलाब के भी मुफ्त दिये थे जो अब खासे हरे-भरे हो आये थे। मगर उसे गन्दगी पसन्द नहीं थी। माली जाते वक्त पौधों से झड़ी हुई खादमिली मिट्टी व पौधों की बासी पत्तियाँ मेज पर छोड़ जाता था।

"साले, कूड़ा मेज पर छोड़ा तो अच्छा नहीं होगा।" नन्दलाल ने आईना, ब्रुश, कंघी, साबुन, कैंची और सस्ती क्रीम जैसी बीसियों चीजों से भरा थैला साइकिल पर लटकाते हुए धमकाया।

माली हँसने लगा। उसने अपनी सफाई-पसन्दगी का सबूत देते हुए

मेज पर अपना अँगोछा रगड़ना शुरू कर दिया। नाई को थोड़ा और खुश करने के लिए बोला, "बीड़ी पीते जाओ।"

"बीड़ी ? साली बदबू करती है। मैं सिगरेट पीता हूँ।" कहकर नन्दलाल ने चलते-चलते कुर्सी की पीठ में लगे उस हिस्से को कील सहित निकाल लिया जिस पर गर्दन टिकाकर लोग उससे हजामत बनवाते थे।

उसकी यह कुर्सी तो बिल्कुल मामूली किस्म की थी। पर उसकी पीठ पर नन्दलाल ने लकड़ी के दो छेददार टुकड़े बढ़ई से ऊपर-नीचे जड़वा लिए थे। इन छेदों में वह लकड़ी का ही ऐसा अर्धचन्द्र अटका देता था जिसके नीचे एक लम्बी छड़ी जैसी लगी थी। इस छड़ी में कुछ सूराख भी थे जिनमें एक कील घुसा देने पर वह अर्धचन्द्र चाही हुई ऊँचाई पर रोका जा सकता था।

दूकान अकेली पाकर एकाध बार कोई शरारती बच्चा यह अर्धचन्द्र चुरा ले गया था। इसीलिए अब नन्दलाल बाकी चीजों के साथ इसे भी थैले में डाल लेता था।

माली ने अपने पौधों को मेज पर सजाने में जल्दी नहीं की, बल्कि नन्दलाल के थोड़ी दूर निकल जाने तक वह इस तरह मेज साफ करता रहा जैसे पौधों को मेज पर रखने में उसकी कोई खास रुचि न हो।

अभी धूप थोड़ी बाकी थी। चौराहे की तरफ खड़ी तीन मंजिली नर्सिंग होम की इमारत की समूची दो मंजिलें धूप में थीं। दाईं तरफ के मकानों की कतार के ऊपरी हिस्से पर भी धूप की पट्टी चिपकी थी।

बाजार लगने का यही वक्त था। सड़क के उस पार हरिराम पुरानी साइकिल पर गोभियों के दो थैले आगे लटकाये और एक बहुत ऊँचा पिरामिड कैरियर पर साधे आ गया था। साइकिल खड़ी करके उस पर से गोभी के ढेर उतारने का काम खासा मुश्किल होता था, क्योंकि जरा-सा चूकने पर साइकिल ताँगे के घोड़े की तरह अगला पहिया ऊपर उठा लेती थी। हर रोज यही होता था। यूसुफ मियाँ उसी के करीब साग फैलाकर बेचते थे और दूसरों से काफी पहले ही आ जाते थे। दूसरों को परेशानी में डालनेवाले हरिराम को बेहतरीन गालियाँ सुनाते हुए अकसर पिरामिड की मुसीबत से वही बचाते थे।

आज वे आये नहीं थे, उलार होती साइकिल साधने के लिए हरीराम को कई बार जोर लगाना पड़ा, फिर भी गोभियों का वह ढेर गिर ही पड़ा। हरीराम झेंपकर हँसने लगा।

माली ने अँगोछा कंधे पर डाला और सड़क पार करते हुए ऊँची आवाज में बोला, "अरे, क्यों मरे जा रहे हो! आ रहा हूँ। अकेले नहीं होगा···।"

एक और बयान

कहानी अकसर शुरू आपकी मर्जी से होती है लेकिन आगे अपनी मर्जी से मुड़ने लगती है जैसा कि इस कहानी में हुआ। यूसुफ मियाँ बिना किसी पूर्व योजना के गायब हो गए। क्यों गायब हो गए? बीमार हो गए होंगे। रास्ते में दुर्घटना हो गयी होगी। किसी और काम में फँस गए होंगे या फिर कोई वजह होगी जिसकी मैंने भी कल्पना न की हो। अगर वजह सचमुच ऐसी हुई तो कहानी में बिल्कुल ही अप्रत्याशित परिवर्तन हो सकता है।

कहानी का पहला सूत्र

अब यहाँ यह भी बता दूँ कि यह कहानी सूझी कैसे। कौन-सी वह बीज घटना थी जिसका असर धुल नहीं पाया और काफी अन्तराल के बाद भी जो एक सम्पूर्ण कथा-जगत् का अनुभव देती रही।

जिस बाजार का ऊपर मैंने जिक्र किया है उसके चरित्र का अध्ययन बाद में दूँगा पहले उस बीज़ घटना का बयान कर दूँ।

बीज घटना

कालोनी में फिरनेवाले मजदूरों के बारे में मेरी धारणा बहुत अच्छी नहीं है। मुझे लगता रहा है कि वे खासे कामचोर और बेईमान हैं। मौका मिलने पर आपको बड़ी आसानी से ठग सकते हैं। बल्कि मेरी बीवी का खयाल है ये लोग चोर भी होते हैं। इसीलिए उनसे घर में कोई छोटा-मोटा काम लेने में वह खासी सावधानी बरतती है।

एक बार पीछे के लॉन में फालतू ईंट, पत्थर और कूड़ा हटाने के लिए उसने किसी को पाँच रुपये दिये। उसका खयाल था कि वह आधा दिन तो लगाएगा ही पर उस बेईमान ने आधे घंटे में ही सफाई कर दी और पाँच रुपये वसूलने खड़ा हो गया। मेरी बीवी को इतना गुस्सा आया कि वह उसे चार रुपये भी देने को तैयार नहीं थी पर वह अकड़ने लगा।

इसी के कुछ दिन बाद घर में चोर आ गया। चूँकि कुत्ते भौंक पड़े इसलिए वह बाहर टँगा एक फटा कम्बल ही ले जा पाया। चोर के पैरों के निशान मिट्टी में ही नहीं, दीवार पर भी थे। हम लोगों ने वे बहुत बड़े-बड़े निशान किंचित् भय से देखे। मेरी पत्नी ने पूरे विश्वास से घोषणा की कि यह चोर वही बदमाश मजदूर था क्योंकि उसके पैर के पंजे भी बड़े-बड़े थे और फिर वह हर तरफ देख क्यों रहा था?

तो इसी सच्चाई को जानते हुए हमने फैसला किया कि पिछले साल जिससे हमने दो रुपये बोरी गोबर की खाद ली थी उससे इस बार नहीं लेंगे। वह जरूर बेईमानी करता होगा। पास के दूधिए से गोबर की खाद लेने के लिए मैंने कुछ बोरियाँ डिक्की में रख लीं। मोटर को निकट से छूने के लालच में दूधवाले के बच्चे बड़ी खुशी से बोरियों में खाद भरने लगे।

उस वक्त धूप काफी तीखी थी। जहाँ मैं खड़ा था उसी के पास नन्दलाल का वह हजामत बनानेवाला सैलून था। नन्दलाल दोपहर का खाना खाने जा रहा था। मुझे धूप से तंग होते देखकर उसने बड़ी उदारता से फूस की छत के नीचे आकर हजामतवाली कुर्सी पर बैठने का आग्रह किया। मैं बैठा तो नहीं पर साये में जरूर आ गया।

दूधवाले के बच्चे बहुत प्रसन्नता के साथ बोरों में खाद भर रहे थे। मैं जानबूझकर बड़ी बोरियाँ ले गया था ताकि दो रुपये में उम्मीद से ज्यादा ही खाद भरवा सकूँ।

ऊब से बचने के लिए मैंने आसपास निगाह दौड़ायी।

नन्दलाल की दूकान के पास ही एक खोखा और था जिसके सामने एक पम्प, तसले में गँदला पानी और कुछ रिंच रखे थे। बाकी औजार, कुछ कटे-फटे टायर और दो-तीन साइकिलों के पंजर खोखे में थे। यह साइकिल की

मरम्मत की दूकान थी।

इसी दूकान के सामने बैठे दो-तीन लोगों ने बड़े उपहास के साथ आवाज दी, "अमाँ, ये कबाड़ कहाँ से ले आये?"

मैंने देखा एक आदमी बच्चों की तीन पहिएवाली, दो हिस्सों में टूटी साइकिल लिए खड़ा है।

ललकार सुनकर उसने तीन पहियोंवाली साइकिल के दोनों टुकड़े जमीन पर रख दिए और बोला, "कबाड़ नहीं है। इसके पहिए देखो। एक-दम नए हैं। ग्रीस-ग्रीस पड़ जाएगी तब देखना। इन्हीं पहियों के लिए खरीदी है।"

बोलते हुए वहीं बैठकर वह उन दो टुकड़ों को जोड़कर दिखाने लगा।

टिप्पणी

उस आदमी का इसके बादवाला संवाद ही वह कथाबीज है जिसे लेकर यह कहानी लिखने की तैयारी हुई। वह संवाद कितना महत्त्वपूर्ण है यह आप खुद सोच सकते हैं।

कथाबीज बननेवाला संवाद

तीन पहिएवाली इस खिलौना साइकिल को हसरत से देखते हुए उसने कहा, "क्या बताऊँ यार, बहुत दिन से इसकी तलाश में था। बच्चे साइकिल की जिद किए हुए थे। मैंने कहा था, साइकिल आ गयी है, रईस के यहाँ ठीक हो रही है। पर बच्चे अब कहने लगे थे कि अब्बा बड़े झूठे हैं। और क्या कहूँ यार, बीवी ने तो उससे ही इनकार कर रखा था।" कहकर उसने राज के साथ आँख मारी।

पार्क का माली हरिराम बोला, "इफ्तखार से जुड़वाना। बढ़िया वेल्डिंग करता है।"

"नहीं जी, रईस अपना यार है। उसी से वेल्डिंग कराऊँगा। रंग कर देगा फिर देखना।"

इसी बीच की एक और घटना

इस नयी बसी साफ-सुथरी कालोनी के उत्तरी सिरे पर सलीके से बने मकानों की पंक्ति में थोड़ा बिखराव आ गया है। दो मकान तो खासे आड़े-तिरछे हो गए हैं क्योंकि इनके बीच इस्माइलगंज नाम के एक गाँव के अवशेष हैं।

दोनों आड़े-तिरछे मकानों के बीच एक पुराना मन्दिर है। यहाँ से शुरू होकर समूचे बी ब्लाक की मुख्य सड़क पर हर बुधवार को एक बाजार लगता है। जब यहाँ यह कालोनी नहीं बसी थी उन दिनों इस बाजार में मवेशी भी बिकते थे और कोई चर्खेवाला झूला भी लगा लेता था।

बाजार आज भी लगता है और शायद पहले से ज्यादा बड़े पैमाने पर। अब यहाँ पहले की तरह पुराने फिल्मी गानों के बजाय दूकानदारों और खरीदारों का शोर होता है। चमकीले सस्ते कपड़ों की दूकानें ज्यादा होती हैं। यहाँ आनेवाले खरीदार को लगता है कि वह दूकानदार को ठग रहा है और दूकानदार को विश्वास होता है कि वह खरीदार की जेब काट रहा है। पर सच यह है कि एक-दूसरे को ठगने की कोशिश करते वे दोनों ही किसी तीसरे के द्वारा ठगे जा रहे होते हैं।

पिछले तीन बुधवारों से हमारे लिए एक असुविधाजनक बात हो गयी थी। हमारे मकान के फाटक के बाहर जो खुली जगह मोटर निकालने के लिए पक्की कर दी गयी थी वहाँ एक लम्बा दुबला आदमी रूमाल, तौलिए और तकिए के गिलाफ की दूकान लगाने लग गया था।

गोकि उससे हमें खास असुविधा नहीं थी पर हमें अपने फाटक के सामने की इस जगह के ऐसे अनधिकृत प्रयोग पर गुस्सा आने लगा था।

पिछले बुधवार उसे हमने टोका तो उसने अपना सामान थोड़ा-सा किनारे खिसका लिया लेकिन थोड़ी ही देर में दूकान फिर अपनी जगह आ गयी।

हमने घर के अन्दर इस स्थिति पर गम्भीरता से विचार किया। उस आदमी से सीधे भिड़ना हमें ठीक नहीं लगा। मेरी बीवी ने उसकी लम्बी मूँछें और दाढ़ी के बढ़े हुए बाल गौर से देखे थे और उसका खयाल था कि यह आदमी जरूर दिन में तौलिए बेचता है पर रात में डकैती डालता

होगा।

इसलिए हमने चुपचाप बाजार में तैनात किसी सिपाही की मदद लेने का फैसला किया। पुलिस के सिपाही की तलाश में उस भीड़भरे बाजार से गुजरते हुए ही मैंने एक खास घटना देखी।

सारे बाजार को उलझन में डालती हुई एक बहुत ऊँची आवाज किसी औरत के चीख-चीखकर रोने की गूँजी।

बिना सलीके के बहुत पुरानी लेकिन सावधानी से धोयी बारीक नायलोन की पीली साड़ी पहने नंगे पैर एक कमउम्र, काली, दुबली औरत सिर पर हाथ मारती हुई चीख-चीखकर रोती मेरी तरफ आई फिर फुटपाथ की तरफ मुड़ गई। उसके पीछे-पीछे दो सहमे हुए छोटे बच्चे भी दौड़ रहे थे।

मैं समझा, उसका कोई बच्चा खो गया। पर उसके पीछे आई दो औरतों ने किसी की जिज्ञासा के जवाब में बताया कि उसकी एक पायल कहीं गिर गई थी।

अब मैंने ध्यान दिया कि उसके एक टखने में बहुत हल्की चाँदी की पतली जंजीर थी, दूसरे में गायब थी। मुश्किल से चालीस या पचास रुपये की कीमतवाली। इसी चालीस-पचास रुपये की एक पायल के खो जाने पर वह इस तरह रो रही थी जैसे किसी प्रियजन की मृत्यु हो गई हो।

कथा संभावनाएँ

यह औरत इनमें से किसी भी चरित्र की बीवी हो सकती है। तीन पहिएवाली टूटी साइकिल लानेवाले आदमी की बीवी या हरिराम की, नन्दलाल की अथवा माली की। यूसुफ मियाँ की भी।

सच तो यह है कि इनमें से सभी की बीवियाँ लगभग ऐसी ही हैं। वे सभी एक सस्ती पायल खोने पर इसी तरह चीत्कार करेंगी। क्योंकि इस खबर के बाद हरिराम भी ज्यादा शराब पिएगा और यूसुफ भी, नन्दलाल भी और रियाज भी। ज्यादा शराब पिएगा तो बीवी को ज्यादा पीटेगा। वैसे बीवी पिटने के डर से नहीं रोती। इसलिए रोती है कि जिन्दगी में जिसे अपनी सबसे प्रिय चीज समझती है वह खो गई है।

कहानी जारी रखने की जरूरत

इस सबके बाद जब इस कहानी को आगे बढ़ाना चाहें तो आपका भी ध्यान जाएगा कि यूसुफ मियाँ आज नहीं आए। कहाँ रह गए? क्यों नहीं आए?

किसी कहानी में जो भी पात्र आते हैं उनके वहाँ होने का तर्क जरूरी होता है। उनमें से कोई न हो तो भी पता होना जरूरी होता है कि ऐसा क्यों हुआ। यूसुफ मियाँ क्यों नहीं आए होंगे?

कहानी में यूसुफ मियाँ कौन हैं

एक यूसुफ मियाँ बचपन में उर्दू पढ़ाने आया करते थे। उनका काफी ऊँचा लेकिन बहुत मैला हुक्का और टूटकर झूला बन गई मूँज की नंगी चारपाई मुझे आज भी याद है।

देश का बँटवारा होने के बाद उन्होंने मुझसे हिन्दी पढ़नी शुरू की थी। थोड़े दिनों बाद उनकी हत्या हो गई थी। हत्या उन्हीं के बेटों ने की थी क्योंकि उनका खयाल था कि यूसुफ मियाँ ने बहुत-सा धन खेत बेचकर इकट्ठा किया था और उसे कहीं छुपा लिया था। जबकि सच यह है कि उनके खेत पटवारी ने किसी और के नाम चढ़ा दिए थे। पिता की हत्या के बाद तीनों बेटे कहीं गायब हो गए और दुबारा कभी वापस नहीं आए। यूसुफ मियाँ का घर बहुत दिनों तक धीरे-धीरे गिरता रहा। हर बारिश में।

एक दूसरे यूसुफ मियाँ वे हैं जो ऊपर बताए बाजार में नन्दलाल के सैलून के सामने बैठते हैं, कई तरह के साग लेकर। उनके साग बहुत ताजे और साफ-सुथरे होते हैं।

आज वे नहीं आए। क्यों नहीं आए?

एक तीसरे यूसुफ मियाँ भी हैं।

टिप्पणी

किसी कहानी में आया चरित्र कभी-कभी कई दूसरे चरित्रों को मिला-जुलाकर भी बनता है।

तीसरे यूसुफ मियाँ

जिन सात आदमियों की मृत्यु बादशाह नगर के हंगामे में, अखबारों के अनुसार हुई, उनमें से एक यूसुफ मियाँ का रिश्ता मेरे इलाके से रहा है। मेरा इलाका, मतलब मीनागंज विकास खण्ड। यूसुफ मियाँ इसी विकास खण्ड के गाँव इस्माइलगंज में रहते थे। ऐसा कहा जाता है कि अठारह अप्रैल को उनकी मृत्यु छह और लोगों के साथ बादशाह नगर में हुई।

यही बड़ी अजीब दुर्घटना थी।

प्रधानमन्त्री सपरिवार, लखनऊ के तराई क्षेत्र में तीन दिन की छुट्टियाँ मनाने जा रहे थे। उनके पीने का पानी बादशाह नगर हेलीपैड पर उतरा था और वहाँ से एक खास किस्म की गाड़ी पर तराई जानेवाला था।

यह पानी प्रधानमन्त्री और उनके परिवार के लिए ग्रीनलैंड के एक हिमखण्ड से आता था। पीने के इस पानी की शुद्धता बनाए रखने के लिए इसे एक ऐसे यंत्रसज्जित बर्तन में रखा जाता था जो कंप्यूटर से नियंत्रित होता था। दूर से देखने पर लगता था चमकीले स्टील की नलियों से जुड़े शीशे के एक बड़े मर्तबान में हीरे भरे हुए हों। पानी रखने के इस अद्भुत बर्तन को सुरक्षित एक जगह से दूसरी जगह ले जाना भी एक समस्या थी।

प्रधानमन्त्री को यह पानी तो एक अमरीकी संस्थान भेजता था पर हमारे देश में इस पानी में कोई गड़बड़ी न होने पाए इसकी जिम्मेदारी रूस ने ली हुई थी। पानी को ढोनेवाली गाड़ी वहीं से आई थी। वह इस तरह बनाई गई थी कि हमारे देश के वायुमण्डल का प्रदूषण उस पर कोई असर न डाल सके। पानी की सुरक्षा के लिए विशेष रूप से प्रशिक्षित एक सैनिक दस्ता साथ चलता था। इसी तरह उनके दस्तरखान के लिए पिछले दिनों पश्चिमी जर्मनी से कुछ बेशकीमती बर्तन आए थे जो फ्रांस से मँगाए गए एक खास पाउडर से साफ किए जाते थे। इन बर्तनों और पाउडर को ढोने के लिए भी प्रदूषण प्रतिरोधी एक शीशे की गाड़ी अलग से मँगाई गई थी। गाड़ी में चारों ओर लगे शीशों के अन्दर वे दमकते हुए बर्तन राजसी गौरव की याद दिलाते थे और अखबारों में अकसर उनके चित्र सहित उनकी सुन्दरता के ब्योरे छपते रहते थे।

अखबारों से ही लोगों को मालूम हुआ कि विशेष हेलीकॉप्टरों द्वारा

और बर्तनों की दर्शनीय गाड़ियाँ किस दिन और किस वक्त बादशाह नगर उतरेंगी और वहाँ से तराई जाएँगी। लोग इन गाड़ियों की झलक से वंचित नहीं रहना चाहते थे इसलिए सुबह से ही वहाँ जमा होने लग गए थे। प्रधानमन्त्री की यह खास हिदायत थी कि किसी को इस सुअवसर से वंचित न रहने दिया जाए। लोग इन गाड़ियों में रखी नायाब चीजें आसानी से देख पाएँ इसके लिए जिला प्रशासन ने व्यापक प्रबन्ध कर रखे थे। खण्ड विकास अधिकारी के तौर पर मेरी वहाँ कोई खास जरूरत नहीं थी। मेरी जरूरत तो बहुत बाद में पड़ी।

इतने बड़े इन्तजाम में लोगों के लिए पीने के पानी की जरूरत भूल जाना कोई बड़ी बात नहीं थी। लोग अपना पानी अपने साथ ला सकते थे या फिर सुबह घर से ही काफी पानी पीकर निकल सकते थे।

खुद हेलीकॉप्टर आने में ही दिन के दो बज गए और धूप बेहद असहनीय हो गई। पानी और बर्तनों की गाड़ियाँ देखनेवालों की तादाद इतनी थी कि पाँच बजे तक भी लोग निबट नहीं पाए।

इसी बीच पता लगा कि कुछ लोग तपती धूप में गिरे पड़े हैं। वे सभी बेहोश थे, कोई तीस आदमी, औरतें और बच्चे। अस्पताल पहुँचने पर मालूम हुआ उनमें से सात पहले ही मर चुके हैं। बाकी सिर्फ ग्लूकोज चढ़ाने भर से बच गए।

अखबारों ने छापा—प्रधानमन्त्री के पीने का पानी देखने आई भीड़ में से तीस ने प्यास से दम तोड़ दिया।

प्रशासन ने तुरन्त इसका खण्डन किया—मरे तीस नहीं सिर्फ सात हैं और प्रशासन हर मृतक को पाँच हजार रुपया अनुग्रह राशि दे रहा है।

प्यास से सात आदमी भी मर गए यह शर्मनाक बात है, यह बात प्रशासन को बाद में याद आई। याद तब आई जब विरोध के दबाव में उसे जाँच बैठानी पड़ी।

सात मृतकों में एक यूसुफ मियाँ भी थे, मेरे विकास खण्ड के गाँव इस्माइलगंज के रहनेवाले।

जिस वक्त मैं बुध बाजार में सिपाही खोज रहा था उस वक्त सचिवालय का एक अधिकारी खुद मेरी तलाश कर रहा था। मैं उसे मिला तो

जैसे उसकी जान में जान आई। धीरे से बोला, "श्रीमान् मुख्यमन्त्री जी ने पुछवाया है कि आपके विकास खण्ड में तो यूसुफ नाम का कोई आदमी है ही नहीं, फिर मरनेवालों की सूची में उसका नाम कैसे आ गया ?"

मैं देर तक खामोशी से उस आदमी को घूरता रहा या स्थिति पर गौर करता रहा फिर बोला, "सूची में नाम यूसुफ वल्द हनीफ है। इस्माइलगंज में जो यूसुफ था वो यूसुफ वल्द अख्तर था। इस मामले में प्रशासन को सावधानी बरतने की आदत होती है। वल्दियत यूसुफ की रोती-कलपती बीवी ने लिखाई थी पर लिखी तो मैंने थी। फिर बीवी को लिखना-पढ़ना नहीं आता। सही वल्दियत लिख लेना तो मेरा फर्ज था न।"

इस बात पर वह आदमी मुझे देर तक घूरता रहा फिर उठ गया, "हम लोगों की परेशानी दूर हो गई।"

उपसंहार

नन्दलाल के सैलून के सामने साग बेचनेवाले यूसुफ मियाँ इसीलिए नहीं आए थे उस दिन। वे नहीं आए थे क्योंकि प्रधानमन्त्री के पीनेवाले पानी को देखते हुए वे प्यास से मर गए थे। ये यूसुफ मियाँ यूसुफ वल्द अख्तर ही थे, सरकारी फाईलवाले यूसुफ वल्द हनीफ नहीं। तीन पहिए-वाली साइकिल बन जाने से खुश, बच्चों को साथ लेकर प्रधानमन्त्री का पानी देखने गए थे।

मगर मैं इस कहानी को यूसुफ वल्द हनीफ की तरफ मोड़ना चाहता हूँ और यकीन दिलाना चाहता हूँ कि भीड़ में सिर पर दुहत्थड़ मारकर चीत्कार कर उठनेवाली औरत उनकी बीवी नहीं कोई और थी और वह सचमुच पायल खोने पर रोयी थी, खाविंद खोने पर नहीं। मैं यह भी विश्वास दिलाना चाहता हूँ कि यूसुफ मियाँ आज इसलिए नहीं आए कि वे उसी तीन पहिएवाली साइकिल को ठीक कराकर बीवी-बच्चों के साथ सैर पर निकल गए थे। वैसे भी शहर के दक्षिण की तरफ जो सड़क दूर तक चली गई है उसकी धुंध के जाले को फाड़कर कुछ क्षणों के लिए जो साइकिल-सवार प्रकट होता है उसे पहचाना भी कहाँ जा सकता है !

Urban Renewal

हीराबाई नाचेगी

यह तीसरी बार हुआ था और बिल्कुल उसी तरह, जैसे पहले दो बार।

वैसे तो वे लोग इस बार भी बुलडोजर लाए थे, लेकिन वह दूर ही खड़ा रहा। दो मोटर-ठेलों में आए सिपाही सबसे पहले जोर-जोर से चीखते और निरुद्देश्य लाठियाँ पटकते हुए दौड़े। उनकी इस हरकत से मर्दों की तुलना में औरतों और बच्चों में ज्यादा दहशत फैली। और इनसे भी ज्यादा डर गए वहाँ घूमनेवाले कुत्ते, सूअर, कुछ मुर्गियाँ, बकरियाँ और तोते। इस सबसे वहाँ एक जबरदस्त शोर मच गया। शोर ने घबराहट और ज्यादा बढ़ा दी। लिहाजा मर्द, जो कम डरे थे, इस वक्त बस्ती उजाड़े जाने के इस अभियान का विरोध करने के बजाय जरूरी सामान बचाने के लिए भागे।

सिपाहियों के पीछे लम्बी लोहे की सलाखों और हथौड़ों से लैस कुछ लोग बड़े इत्मीनान से वहाँ बने छोटे-छोटे घर गिराने लगे। उन्हें गिराने में ज्यादा मेहनत नहीं पड़ रही थी।

बस्ती में ज्यादातर मकान आम झोंपड़ियों से भी ज्यादा गिरी हालत की चीज थे। उनकी छतों के बजाय बाँसों और टेढ़ी-मेढ़ी लकड़ियों के पिंजर पर पुराने टाट से लेकर फटे हुए पॉलिथीन की चादर तक टूटी-सड़ी रस्सियों से बाँध दी गई थी और ये मेहनत और होशियारी से बनाई छतें हवा में उड़ न जाएँ, इसलिए उन पर बहुत-से ईंट-पत्थर लाद दिए गए थे। ऐसे मकानों की दीवारें बनाना सबसे मुश्किल काम था और वह अकसर लम्बे अरसे में पूरा होता था; क्योंकि इन दीवारों के लिए धीरे-धीरे करके दूर-दूर से ईंटें चुराकर लानी होती थीं।

यह घर ज्यादा बड़ी जरूरतें पूरी नहीं करता था। इसमें अकसर रेंगकर या बहुत झुककर सिर्फ सोने या धूप और बारिश से बचने की कोशिश की